# हरिवंशराय बच्चन

हरिवंशराय बच्चन का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद शहर में 27 नवंबर 1907 ई० को हुआ था । 'बच्चन' माता-पिता द्वारा प्यार से दिया गया नाम था जिसे इन्होंने अपना उपनाम बना लिया । बच्चन जी कुछ समय तक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहने के बाद भारतीय विदेश सेवा में चले गए थे । उस दौरान इन्होंने कई देशों का भ्रमण किया और मंच पर ओजस्वी वाणी में काव्यपाठ के लिए विख्यात हुए । बच्चन जी की कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं । इनकी रचनाओं में व्यक्ति-वेदना, राष्ट्र-चेतना और जीवन-दर्शन के स्वर मिलते हैं । इन्होंने आत्मविश्लेषण वाली कविताएँ भी लिखी हैं । राजनैतिक जीवन के ढोंग, सामाजिक असमानता और कुरीतियों पर इन्होंने तीखे व्यंग्य किए हैं । कविता के अलावा बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा भी लिखी, जो हिंदी गद्य की बेजोड़ कृति मानी गई । 2003 ई० में मुंबई में इनका निधन हुआ ।

बच्चन जी की प्रमुख कृतियाँ हैं – 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'मिलन-यामिनी', 'आरती और अंगारे', 'टूटती चट्टानें', 'रूप तरंगिनी' (सभी कविता संग्रह) और आत्मकथा के चार खंड – 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' तथा 'दशद्वार से सोपान तक' ।

बच्चन जी साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और सरस्वती सम्मान से सम्मानित हुए ।

प्रस्तुत कविता 'आ रही रवि की सवारी' बच्चन जी के कविता संकलन 'निशा-निमंत्रण' से ली गई है । इन्होंने यह कविता अपनी प्रथम पत्नी श्यामा देवी की मृत्यु के बाद लिखी थी । युग-जीवन की निराशा को मस्ती में रूपांतरित कर लेनेवाले बच्चन जी के व्यक्तिगत जीवन में जब वह घटना घटी तो फिर वह मधु के गीत नहीं गा सके । धीरे-धीरे बच्चन निष्क्रियता की परिधि से बाहर निकले तो एक दिन अनायास कविता की पंक्ति उनके अंतर से फूट निकली । यह निशा-निमंत्रण की पहली पंक्ति थी और साथ ही कवि का अपनी काव्ययात्रा के दूसरे चरण में प्रवेश । निशा-निमंत्रण में बच्चन की काव्य प्रतिभा का विस्फोट हुआ है । 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' से निशा के आगमन की व्यथा-कथा शुरू होती है और जैसे-जैसे निशा गहराती है, अवसाद बढ़ता जाता है । फिर भोर में आशा की पहली किरण फूटती है और कुछ देर बाद क्षितिज पर संभावनाओं का सूरज झाँकता दिखाई देता है । यह सूर्य बच्चन के जीवन का नया सूर्य तो है ही, साथ ही राष्ट्रीय जीवन में स्वाधीनता और नवनिर्माण का सूर्य भी है ।

# आ रही रवि की सवारी

नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी ।
आ रही रवि की सवारी !

विहग बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी !
आ रही रवि की सवारी !

चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह
रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी !
आ रही रवि की सवारी !

# अभ्यास

## कविता के साथ

1. 'आ रही रवि की सवारी' कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
2. कवि ने किन-किन प्राकृतिक वस्तुओं का मानवीकरण किया है ?
3. 'आ रही रवि की सवारी' कविता में चित्रित सवारी का वर्णन करें ।
4. **भाव स्पष्ट कीजिए -**

   चाहता, उछलूँ विजय कह,
   पर ठिठकता देखकर यह
   रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी ।
5. रवि की सवारी निकलने के पश्चात प्रकृति उसका स्वागत किस प्रकार से करती है ?
6. रात का राजा भिखारी कैसे बन गया ?
7. इस कविता में रवि को राजा के रूप में चित्रित किया गया है । अपने शब्दों में यह चित्र पुनः स्पष्ट कीजिए ।
8. कवि क्या देखकर ठिठक जाता है और क्यों ?
9. सूर्योदय के समय आकाश का रंग कैसा होता है – पाठ के आधार पर बताएँ ।
10. 'चाहता उछलूँ विजय कह' में कवि की कौन-सी आकांक्षा व्यक्त होती है ?
11. राह में खड़ा भिखारी किसे कहा गया है ?
12. 'छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी' का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें ।

## कविता के आस-पास

1. बच्चन की कुछ अन्य प्रमुख कविताएँ संकलित कीजिए ।
2. 'आ रही रवि की सवारी' कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए ।
3. बच्चन की कविता 'आ रही रवि की सवारी' जीवन को नया संदेश देती है; आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है । इसी भाव की अन्य कविताओं को उपलब्ध कर पढ़ें ।
4. हरिवंश राय बच्चन के ज्येष्ठ पुत्र और हिंदी सिनेमा के प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन ने 'मधुशाला' को गाया है । उसका कैसेट उपलब्ध करें और यह जानने की कोशिश करें कि कविता कैसे पढ़ी जाए ।

## भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –**

   रवि, किरण, कुसुम, स्वर्ण, विहग, रात

2. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –**
   सवारी, कलि, पोशाक, मैदान, फौज, भिखारी
3. कविता में प्रयुक्त उपमानों को चुनें ।
4. कलि-कुसुम और कीर्ति-गायन में कौन-सा समास है ?
5. कविता में आए देशज और विदेशज शब्दों को चुनें ।
6. **निम्नलिखित पंक्तियों से विशेषण चुनें –**
   नवकिरण का रथ सजा है,
   कलि-कुसुम से पथ सजा है
   बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी !
7. 'विहग बंदी और चारण' में कौन-सा अलंकार है ?
8. **निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखें –**
   किरण, कलि, पोशाक, सवारी
9. यह कविता एक रूपक है । रूपक अलंकार के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी हासिल करें तथा उनसे यह जानकारी लें कि इस कविता में रूपक का क्या स्वरूप है ?

**शब्द निधि**

**अनुचर** : दास या सेवक
**विहग** : पक्षी
**बंदी/चारण** : राजा की स्तुति का गान करनेवाले
**तारक** : सितारा, तारा
**ठिठकना** : रुक-रुक कर जाना
**स्वर्ण** : सोना
**रवि** : सूर्य
**कीर्ति** : यश
**फौज** : सेना
**विजय** : जीत